प्रो . अच्युत सामंत से सीधी बातचीत

1965 में महाप्रभु जगन्नाथ के देश ओड़िशा के कटक जिले के कलरबंक गांव के एक बहुत ही गरीब परिवार में डा अच्युत सामंत का जन्म हुआ।जब ये मात्र 4 साल के थे तभी इनके पिताजी का निधन हो गया।बाल्यावस्था में ही इनके ऊपर जिम्मेदारियों का पहाड़ टूट पड़ा।अपनी से इन्होंने त्यागी जीवन जीने की प्रेरणा ली।इनकी मां कड़ाके की ठण्ड में आम के पत्ते बटोरकर गुड़ बनाती थी और अपने बाल–बच्चों की परवरिष करती थी।इनकी अपनी मां ही इनके लिए इनकी सच्ची पथप्रदर्षिका बनी और उनके ही त्यागमय जीवन से प्रेरणा लेकर ये आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लिए और षिक्षा के माध्यम से गरीबी उन्मूलन के पथपर आगे बढ़े।

कर गरीबों की सेवा में अपने आपको समर्पित करने का निर्णय लिया।एक छोटे बालक की टेक ने उसी नन्हें बालक को आज कामयाबी की उस मंजिल पर ला खड़ा कर दिया है कि आज पूरा विष्व डा अच्युत सामंत को सच्चा षिक्षाविद् मानता है।कहते हैं कि जीवन की असाधारण सफलता मुख्यतः चार बातों पर निर्भर करती है।नई सोच,उस सोच में पूर्ण विष्वास,उस सोच की प्राप्ति के लिए किया गया भगीरथ प्रयास और एक विदेह के रुप में हर तरह के भौतिक सुखों का त्याग।एक अनौपचारिक बातचीत में डा सामंत ने बताया कि उन्होंने बाल्यकाल में सबसे पहले अध्ययन किए ।अपने भाई–बहनों को पढ़ाये।और सिर्फ 12 विद्यार्थियों का उनका छोटा सा औधोगिक प्रषिक्षण संस्थान विकसित होकर एक विषाल संस्थान में बदल गया और 2004 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय,भारत सरकार द्वारा उसे एक विष्वविद्यालय के रुप में घोषित किया गया।

ऐसा लगता है कि सब कुछ इतने बढ़िया तरीके से तैयार किया गया और लागू किया गया कि कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंइस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) अब भी उत्कृष्टता की तलाष में आगे की ओर बढ़ रहा है।अर्थषास्त्री और नियोजक यह समझने की कोषिष करते हैं कि किस तरह 1997 के बाद से उनींदे भुवनेष्वर की सीमा पर स्थित स्थान चहल–पहल से भरे एक जीवंत शहरी केंद्र में रूपांतरित हुआ।इस रूपांतरण के पीछे न कोई डिडेलस था न ही कोई अर्थषास्त्र में नोबल पुरस्कार विजेता बल्कि ओड़िषा के एक अनजाने से गांव का एक व्यक्ति था जो घोर गरीबी में पला था और अपने पांचवे जन्मदिन से पहले पिता की मृत्यु के बाद उसकी मदद के लिए कोई नहीं था।

यह चमत्कार ही है कि केआईआईटी दुनिया के बेहतरीन विष्वविद्यालयों में से एक बन गया है जो लगभग 350 एकड़ जमीन पर फेला है,इसके सोलह हरे–भरे परिसरों में 50 लाख स्क्वायर फीट निर्मित क्षेत्र में 23 संबद्ध स्कूलों में 40 पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं।सोलह हजार विद्यार्थियों के लिए 13 हॉस्टल हैं और लगभग 50 उम्दा प्रयोगषालाएं हैं जिनकी देखभाल 600 फेकल्टी और 2500 प्रबंधन व सहयोगी कर्मचारियों द्वारा की जाती है।कुछ एम.टेक और पीएच.डी सहित आईआईटी के लगभग 70 पूर्व विद्यार्थियों की नियुक्ति के कारण इस वर्ष केआईआईटी के अपने शैक्षिक उपलब्धियों में और उत्कृष्टता हासिल करने की उम्मीद की जा रही है।

विष्वस्तरीय बुनियादी ढांचे या परिसरों के बीच आधुनिक वायरलेस कनेक्टिविटी ने नहीं,बल्कि गुणवत्ता ने केआईआईटी को अपने आप में एक बेहतरीन संस्थान का स्तर अनुमोदित,विनियमित करने के लिए संसद के अधिनियमों द्वारा बनाए गए दो सर्वोच्च निकायों यूजीसी और एआईसीटीई द्वारा केआईआईटी को एनएमसी और एमबीए मान्यता देना सब कुछ कह देता है।बहुत से स्वायत्त निकायों ने केआईआईटी को देष के सभी तकनीकी निकायों ने केआईआईटी को देष के सभी तकनीकी संस्थानों में 16वें और आत्मनिर्भर विष्वविद्यालयों में 5वें स्थान पर रखा है।दो लिम्का बुक ऑफ रिकाड्र्स में केआईआईटी का उल्लेख सोने पर सुहागा है।

कोई विष्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों,अपने फेकल्टी सदस्यों और अपने संबंधों की वजह से जाना जाता है।इंजीनियरिंं,प्रबंधन,ग्रामीण प्रबंधन,विधि,जैवप्रौद्योगिकी,एमसीए,चिकित्सा विज्ञान और दंत विज्ञान में विद्यार्थियों को प्रषिक्षण देने के लिए आईआईटी,एनआईटी,आईआईएम और विदेष से जाने माने षिक्षाविदों को बुलाना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है।केआईआईटी में आयोजित राष्ट्रीय और

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों ने शैक्षिक हलकों में नए मानदंड स्थापित किए है और नोबल पुरस्कार विजेताओं सहित प्रतिभाषाली लोगों का मेल विष्वविद्यालय का स्तर और प्रतिष्ठा दिखाता है।केआईआईटी के फैकल्टी सदस्यों द्वारा लगभग छह सौ शोध प्रकाषन केआईआईटी की उत्कृष्टता की गवाही देते हैं।

वर्तमान वैष्विक परिदृष्य में सहयोग निष्चित रुप से सफलता की कुंजी है।उद्योगों, दुनिया के विष्वविद्यालयों के साथ केआईआईटी के सहयोग और प्रतिष्ठत अंतर्राष्टीय निकायों की सदस्यता इस संस्थान को अनूठा बनाती है।एसोसिएषन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज (एसीयू), यूनिवर्सिटी मोबिलिटी इन एषिया एंड द पेसिफिक (यूएमएपी) का सदस्य होते हुए और दुनिया के लगभग 25 प्रमुख विष्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के साथ केआईआईटी ने सफलतापूर्वक अपने विद्यार्थियो और दुनिया के सैंकड़ों विष्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए एक दूसरे के विष्वविद्यालयों में अध्ययन और शोध करने सहित असंख्य विनिमय कार्यक्रमों के लिए अवसर के द्वार खोल दिए हैं।

विष्वविद्यालयों से बाहर आने विद्यार्थियों के लिए रोजगार विहीन षिक्षा निराषादायक हो सकती है।केआईआईटी एक अपवाद है जहां विद्यार्थी अंतिम परीक्षा उत्त्तीर्ण करने से पहले रोजगार के लिए आष्वस्त होते हैं।मंदी के दौरान भी अपने विद्यार्थियों के लिए सौ फिसदी प्लेसमेंट वास्तव में किसी भी रुप में अविष्वसनीय है।

एक विष्वस्तरीय विष्वविद्यालय के निर्माण ने कभी सामंत को संतुष्ट नहीं किया जिनका दिल सुविधाओं से वंचित देष के गरीब आदिवासी बच्चों के लिए दुखता था।

भूख,गरीबी के साथ उनका नाता अत्यंत गरीबों को एक गरिमापूर्ण जीवन देने के लिए उनके अंदर का प्रेरणादायी स्रोत बना रहा।उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता की बेहतरीन अभिव्यक्ति कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोषल साइंस में हुई है..... केआईएसएस विषिष्ट रुप से दस हजार आदिवासी बच्चों के लिए दक्षिण एषिया का सबसे बड़ा संस्थान है।यहां पर अत्यंत गरीब आदिवासी बच्चों को किंडरगार्टन से पोस्ट ग्रेजुएषन (केजी से पीजी) तक षिक्षा प्राप्त करने के लिए भोजन,अवास,स्वास्थ्य और जीवन की सभी दूसरी मूलभूत सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।इसे दूसरे शांतिनिकेतन के रुप में जाना जाता है।आदिवासी बच्चे हर क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्षन कर सकते हैं,यह तथ्य केआईएसएस के बच्चों ने साबित किया है जिन्होंने षिक्षा और खेलों में अपने प्रदर्षनों के द्वारा देष को वाहवाही दिलाई है।

समंत की धारण कि ‘गरीबी अषिक्षा को जन्म देती है और साक्षरता गरीबी को दूर करती है’और यह गुरुमंत्र कि ‘षिक्षा देना किसी दृष्टिहीन को दृष्टि देने जैसा है’इतना प्रासंगिक हो गया है कि केआईआईटी और केआईएसएस आने वाले देष के राष्ट्रपति से लेकर उप राष्ट्रपति,नोबल विजेता,राज्यपाल,कैबिनेट मंत्री,राज्यों के मुख्य मंत्री,सांसद,उद्योगपति,सामाजिक कार्यकर्ता,वैज्ञानिक,राजनयिक और यहां तक कि दक्षिण अफ्रीका के नॉर्थ वेस्ट प्रोविंस के प्रमुख भी इस बारे में एकमत थे कि जबकि केआईएसएस को दुनिया के हर कोने में दुहराने की जरुरत थी,केआईआईटी को उत्कृष्टता पाने की लालसा रखने वाले हर शैक्षिक संस्थान के लिए रोल मॉडल होना चाहिए।हर किसी ने आष्चर्य के साथ यह कहा कि किस प्रकार अपने षिल्पकार के गरीबी की पृष्ठीाूमि के बावजूद केआईआईटी जैसा इतना महान संस्थान इतने छोटे समय में विष्वस्तर के उत्कृष्ट शैक्षिक संस्थानों में शामिल हो सकता है।अच्युत सामंत दूसरे मदन मोहन मालवीय निकले जिन्होंने अपनी जेब में एक भी पैसा न होने के बावजूद केआईआईटी के स्थापना की।यहां तक कि पूर्व मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंह ने भी अपने दौरे के समय सामंत को मालवीय की तरह बताया।

महान लोग अलग चीजें नहीं करते बल्कि वे चीजों को अलग तरीके से करते हैं,यह बात सामंत के बारे में उचित सिद्ध होती है जो गरीब के रुप में जन्म लेते हुए भी अपनी दृष्टि,समाजिक उद्यमिता और विष्वास से दुनिया को समृद्ध बना रहे हैं।सामंत को सभी क्षेत्रों से मान्यता और प्रषंसा के रुप में पुरस्कार मिल रहा है जो अब भी अपनी सारी विनम्रता के साथ एक किराये के मकान में

रहते है और इस बात से बेखबर है कि दुनिया उस काम के लिए उनकी कितनी कद्र कर रही है जो वह मानवता के लिए कर रहे है।

एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा कि भारत को और सामंतों की जरुरत है,यही मत किरन बेदी ने भी व्यक्त किया जब उन्होंने कहा कि उन्हें सामंत में असली 'भारत रत्न' मिला।'किसी व्यक्ति द्वारा दुनिया को रहने का एक बेहतर स्थान बनाने के लिए अपने व्यक्तिगत आराम को त्यागना वास्तव में विरल है।'यह केआईएसएस और केआईआईटी में आने वाले अधिकतर विषिष्ट शख्सियतों द्वारा महसूस किया गया है।लेकिन सभी दूरदर्षियों की तरह,सामंत ऊपर की ओर देखते हुए यह आभास करते हैं कि यह सब ईष्वर के आषीर्वाद से संभव हुआ है।जोषीले सामंत की और भी कई योजनाएं है और अब भी उनकी आँखों में कई सपने झिलमिलाजे है क्योंकि उन्हें सोने से पहले बहुत दूर जाना है।

छात्रों के सर्वांगीण विकास को समर्पित षिक्षण संस्थान कीट यूनिवर्सिटी व कीस षिक्षणसंस्थान

जीवन तथा समाज के विकास के लिए षिक्षण तथा प्रबंधन की नितांत आवष्यकता है।सही षिक्षा ही एक छात्र को बेहतर मनुष्य के रुप में विकसित करती है।छात्र के अंदर छिपी प्रतिभा को निखारना ही षिक्षक और षिक्षण संस्थानों का दायित्व है।इसके लिए छात्र के साथ–साथ षिक्षक और षिक्षण संस्थानों का भी षिक्षण के प्रति पूर्ण समर्पण आवष्यक है।यह कहना है षिक्षण क्षेत्र में अपनी सम्पूर्ण सेवा न्योछावर करने के लिए आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प करने वाले ओड़िषा प्रदेष के एक ऐसे षिक्षाविद् डॉ. अच्युत सामंत का,जिनका संकल्प आज विकसित हो हजारों–हजार छात्र–छात्राओं को के.जी. से लेकर पी.जी. स्तर तक तमाम आधुनिकतम विधाओं में षिक्षण दे रहा है।

यह डॉ. अच्युत सामंत की महान तपस्या व त्याग का फल है कि आज उनके द्वारा स्थापित व संचालित कालिंग इन्स्टीट्यूट ऑफ सोषल साइंसेज में ओड़िषा प्रांत के अदिवासी घरों के दस हजार छात्र–छात्राएं निःषुल्क के.जी के स्तर से लेकर पी.जी. स्तर तक की षिक्षा ग्रहण कर रहा हैं।उक्त षिक्षण संस्थान में उन्हें वस्त्र,होस्टल,चिकित्सा की सुविधा निःषुल्क उपलब्ध कराये जाने के साथ उन्हें षिक्षण के दौरान पेषागत षिक्षण भी दिया जाता है,जिससे कि वे छात्र षिक्षण संस्था से स्वावलंबी बनकर बाहर निकलें।पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम,षिक्षामंत्री अर्जुन सिंह,बाबा रामदेव,तमाम देष के बड़े नेता व बुद्धिजीवी ओड़िषा की राजधानी भुवनेष्वर के चंद्रषेखरपुर–पटिया स्थित उक्त कीस परिसर कीस परिसर में छात्रों व षिक्षकों की निष्ठा देख हतप्रभ रह जाते हैं।

बहरहाल ऐसे निष्ठावान,षिक्षाव्रती डॉ. सामंत का संकल्प है कि उनके द्वारा स्थापित कलिंग इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी न सिर्फ देष बल्कि विष्व के ऐसी प्रमुख षिक्षण संस्था बने,जहां से पढ़कर बाहर निकलने वाला छात्र गर्व से कह सके कि वह एक 'कीटियन' है।कीट यूनिवर्सिटी की ओर से एम.बी.ए., बी.टेक (चार वर्ष) बी.टेक (तीन वर्ष) (बायो टेक्नोलॉजी/माइक्रोबायोलाजी),बी.बी.ए./बी.सी.ए. (तीन वर्षीय) का षिक्षण,कलिंग पालीटेक्नीक,कलिंग इंटरनेषनल स्कूलस,कीट साइंस कॉलेज,कीट इंडस्ट्रियल ट्रनिंग इंस्टीट्यूट,कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज,कलिंग स्कूल ऑफ रुलर मैनेजमेंट,कलिंग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट की ओर से विष्व स्तरीय षिक्षण दिया जाता है।भव्य परिवेष तथा आधुनिकतम षिक्षण संसाधनों से संयुक्त कीट यूनिवर्सिटी के तमाम शैक्षणिक विभागों में देष के चुनिंदा विद्वान छात्रों को विषयों की षिक्षा देते हैं।परिसर में छात्रों के बौद्धिक विकास के साथ शारीरिक विकास के लिए तमाम तरीकों के खेलकूद की व्यवस्था की गयी है।आनुषंगिक कीस के आदिवासी छात्रों ने,जिन्होंने पहले कभी रग्बी का खेल तक नहीं देखा था,महज छह महीने के प्रषिक्षण के बाद उन्होंने अंडर 14 रग्बी प्रतियोगिता में विष्वविजेता का पिछले वर्षों खिताब हासिल किया था।इसी प्रकार अंडर 16 रग्बी टीम में काफी बड़ी सफलता मिली थी।पूरे पूर्वी भारत में कीट ही वह दूसरा षिक्षण संस्थान हैं,जिसे यूजीसी के नैक के अतिरिक्त यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज इंटरनेषनल इक्जामिनेषन

(सीआईई) द्वारा आईजीसीएसई मान्यता हासिल है।कीट के छात्रों को उत्साहित करने के लिए विष्व स्तरीय विद्वान समय–समय पर उनके बीच संस्थान द्वारा बुलाये जाते हैं।प्रसंगवष मडिसीन के क्षेत्र में नोबेल विजेता प्रोफेसर रोल्फ एम जिन्करनोंगल,स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख यूनिवर्सिटी के विद्वान प्रोफेसर हैंस हेन्गार्टनर,रसायन के क्षेत्र में नोबेल विजेता प्रोफेसर रिचर्ड आर अर्नेस्ट,नॉटिंघम लॉ स्कूल,ब्रिटेन के प्रोफेसर मार्टिन हंटन ने समय–समय पर संस्थान में पहुंच कर छात्रों का मार्गदषर्न किया है।षिक्षण संस्थान की कक्षाओं से लेकर होस्टल तक में छात्र–छात्राओं को बेहतर परिवेष कराने के लिए 'पंच सितारा' जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध करायी गयी है।यूनिवर्सिटी द्वारा तमाम शैक्षणिक सेमिनारों का आयोजन कराया जाता है,जिससे कि संस्था के छात्र अपनी विद्याओं में विष्व स्तरीय ज्ञान हासिल कर एक कुषल व पूर्ण पारंगत के रुप में समाज में कदम रख अपनी प्रतिभा से सबको चकित करें।विधि की षिक्षा देने के लिए यूनिवर्सिटी की ओर से कीट लॉ स्कूल का संचालन किया जाता है,जो कि बार कौंसिल ऑफ इंडिया द्वारा अनुमोदित तथा नेषनल लॉ स्कूल के ढांचे के अनुरुप संचालित होता है।'आउटलुक–सिनोवेट' द्वारा कराये गये सर्वेक्षण में देष के सभी निजी इंजीनियरिंग षिक्षण संस्थानों के बीच संस्थान के छात्रों को संस्थान से प्लेसमेंट के मामले में उठा और पूरे विष्लेषण के तहत अठारहवां स्थान मिला था।कीट यूनिवर्सिटी का दक्षिण अफ्रीका की नार्थ वेस्ट यूनिवर्सिटी के साथ शैक्षणिक साझे का भी समझौता है।दरअसल विष्वविद्यालय अनुदान आयोग,ऑल इंडिया कौंसिल फार टेक्निकल एजूकेषन (एआईसीटीई) की कार्यकारिणी समिति,ग्रामीण आदिवासियों के विकास के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय की कपार्ट कमेटी के परिषद,नेषनल क्वॉयर बोर्ड के सदस्य के रुप में कर्मठ डॉ. अच्युत सामंत का दावा है कि कीट यूनिवर्सिटी और इसके तहत सभी षिक्षण संस्थान अतिषिघ्र विष्वस्तरीय होंगे।

डॉ. अच्युत सामंत के जीवन की कामयाबी और उनकी शैक्षिक पहल उनकी नई सोच,उनके विष्वास और उनके त्यागमय सतत प्रयास का ही नतीजा है।जिसके फलस्वरुप वे आज आदिवासी अभावग्रस्त समुदाय के मसीहा और भारत के सबसे बड़े षिक्षाविद् बन चुके हैं।उनकी शैक्षिक पहल ने उनको विष्व मानचित्र पर वहां लाकर खड़ा कर दिया है जहां तक पहुंचने की बात कोई सपने में भी नहीं सोच सकता है और यही कारण है कि उनकी कामयाबी की कहानी उनके द्वारा स्थापित कीट तकनीकी विष्वविद्यालय भुवनेष्वर एवं कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोसल साइंसेज किस के कुल दस हजार से अधिक अनाथ आदिवासी बच्चे कह रहे हैं।उन बच्चों को के.जी. से पी.जी. तक निःषुल्क पढ़ाने का डॉ. अच्युत सामंत का सपना आज कामयाब हो चुका है।कीट तकनीकी विष्वविद्यालय की पूर्वी भारत में अपनी एक अलग पहचान है।लगभग 350 एकड़ में निर्मित इस विष्वविद्यालय की गिनती विष्व के चुने हुए तकनीकी विष्वविद्यालयों में होती है जहां पर एक साथ 600 संकाय सदस्य और 2500 विद्यार्थी अध्ययन करते है।

ज्ञान का मंदिर

अच्युत सामंत के संरक्षण में, केआईआईटी 10 वर्षों की अल्प अवधि में एक विष्वस्तरीय विष्वविद्यालय बन गया है

रॉबर्ट फ्रॉस्ट की अमर पंक्तियों, 'आई हैव प्रोमिसेज टू कीप,माइल्स टू गो बिफोर आई स्लीप' (मुझे बहुत से वादे पूरे करने हैं,आंखें बंद करने से पहले बहुत दूर जाना है) को एक व्यक्ति ने साकार कर दिया है जो सिर्फ अपने देषवासियों के लिए कुछ करने निकला था।अच्युत सामंत के लिए यह एक सपना सच होने जैसा था जब 1997 में